AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

लविवि : पीजी के छह कोर्सों की प्रोविजनल मेरिट लिस्ट जारी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में स्नातक कोर्सों की चॉइस फिलिंग प्रक्रिया गति पकड़ने के साथ ही विश्वविद्यालय प्रशासन ने मंगलवार को पीजी के छह कोर्सों की प्रोविजनल मेरिट लिस्ट जारी कर दी। विद्यार्थी इसे अपनी वेबसाइट lkouniv.ac.in पर देख सकते हैं। प्रवेश समन्वयक प्रो. पंकज माथुर ने बताया कि एमए एआईएच एंड ऑर्कियोलॉजी, एमए फिलॉशिफी, एमए डिफेंस स्टडीज, एमए ज्योतिर्विज्ञान, एमए-एमएससी योगा, एमए क्रिमिनोलॉजी एंड क्रिमिनल जस्टिस एडमिनिस्ट्रेशन कोर्स की प्रोविजनल मेरिट लिस्ट जारी कर दी है। जल्द ही अन्य कोर्सों की भी प्रवेश मेरिट जारी कर दी जाएगी। वहीं, दूसरी तरफ विश्वविद्यालय के स्नातक कोर्सों की पहले चरण की चॉइस फिलिंग का परिणाम भी बुधवार को जारी होगा जबकि बीए, बीएससी मैथ्स व बायो की चॉइस फिलिंग की आखिरी तिथि भी बुधवार 29 सितंबर है।

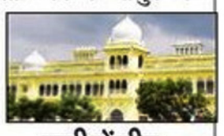

यूजी में बीए-बीएससी का चॉइस लॉक आज तक

लविवि : 12 साल बाद फिर शुरू होगा डी.लिट

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में करीब 12 साल बाद फिर से डी.लिट शुरू होने जा रही है। पूर्व में आर्डिनेंस न होने के कारण इसे बंद करना पड़ा था। अब कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने इसका नया ऑर्डिनेंस तैयार करवाकर पास करवा लिया है। इसी सत्र से इसमें प्रवेश शुरू होने की संभावना है। रजिस्ट्रार डॉ. विनोद कुमार सिंह ने सभी डीन, हेड, निदेशक व समन्वयक को पत्र भेजकर सूचित किया है कि राज्यपाल व कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल द्वारा लखनऊ विश्वविद्यालय के डी.लिट अध्यादेश 2020 को स्वीकृति दे दी गई है। उन्होंने कहा कि जल्द ही विश्वविद्यालय प्रशासन इसके प्रवेश शुरू करने को लेकर भी निर्णय लेगा। लखनऊ विश्वविद्यालय में पूर्व कुलपति प्रो. एएस बरार ने ऑर्डिनेंस न होने के कारण वर्ष 2008 में पोस्ट डॉक्टोरल रिसर्च के दाखिलों पर मौखिक रोक लगाई थी। विश्वविद्यालय प्रवक्ता डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव ने कहा कि काफी वर्षों से ऑर्डिनेंस न होने के कारण डी.लिट में प्रवेश रुके थे। कुलपति प्रो. राय ने उच्च शिक्षा में और बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इसका ऑर्डिनेंस तैयार करवाकर पास करवाया है। अब जल्द इसके प्रवेश भी होंगे। (माई सिटी रिपोर्टर)

NBT PAGE 6

लखनऊ विवि में फिर शुरू होंगे डी-लिट में दाखिले

■ **एनबीटी, लखनऊ :** लखनऊ यूनिवर्सिटी में लंबे समय के बाद डी-लिट में दाखिले फिर से शुरू होंगे। एलयू की ओर से तैयार किए गए डी-लिट के नए ऑर्डिनेंस को राजभवन ने मंजूरी दे दी है। ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि करीब एक दशक के बाद इस साल से एलयू में डी-लिट में आवेदन होंगे।

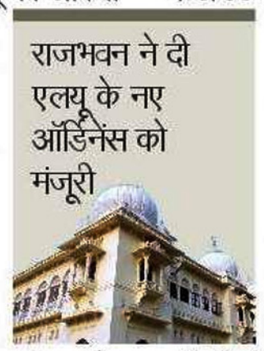

राजभवन ने दी एलयू के नए ऑर्डिनेंस को मंजूरी

प्रवक्ता डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि डी-लिट के नए ऑर्डिनेंस को शासन ने मंजूर कर लिया है। इसे जल्द ही यूनिवर्सिटी की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया जाएगा। आने वाले दिनों में नए ऑर्डिनेंस के अनुसार एडमिशन होंगे।

एडमिशन के लिए 10 वर्ष का अनुभव जरूरी

एलयू की ओर से डी-लिट के लिए तैयार किए गए ऑर्डिनेंस के मुताबिक कोर्स में एडमिशन लेने के लिए कम से कम 10 साल का अनुभव होना जरूरी है। इसके साथ ही कैंडीडेट के कम से कम 15 जर्नल टॉप के पब्लिशर्स के यहां प्रकाशित होने चाहिए। नए ऑर्डिनेंस के अनुसार एडमिशन के लिए स्टूडेंट्स को आवेदन फॉर्म के साथ अपने टॉपिक पर कम से कम 15 सौ शब्द अधिकतर तीन हजार अक्षरों में लिखने होंगे।

इसके साथ ही अपने अनुभव और रेकॉर्ड के प्रूफ भी फॉर्म के साथ जमा करने होंगे। अगर कोई अभ्यर्थी एक बार डी-लिट के एडमिशन की प्रक्रिया से रिजेक्ट हो जाता है, तो उसे कम से कम दो साल तक आवेदन करने से रोक दिया जाएगा। इसके अलावा जब अभ्यर्थी अपनी थीसिस पूरी कर जमा करने की तैयार कर रहे होंगे तो उन्हें पहले एक सेमिनार भी करवाना होगा, इसके बाद ही वे थीसिस जमा कर सकेंगे।

PIONEER PAGE 3

डी-लिट ऑर्डिनेंस को मिली राजभवन से मंजूरी, दस साल बाद शुरू होंगे दाखिले

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लम्बे इंतजार के बाद लखनऊ विश्वविद्यालय में डी-लिट में दाखिले शुरू हो सकेंगे। विवि की तरफ से तैयार नए आर्डिनेंस को राजभवन ने मंजूरी दे दी है। उम्मीद है कि दस साल बाद साल के अंत तक लखनऊ विश्वविद्यालय एडमिशन शुरू कर सकता है।

विवि की तरफ से तैयार किये गए डी-लिट आर्डिनेंस के हिसाब से एडमिशन लेने के लिए कम से कम 10 साल का अनुभव होना जरूरी है। इसके साथ ही अभ्यर्थी के कम से कम 15 जर्नल टॉप के पब्लिशर्स के यहां प्रकाशित होने चाहिए। नए ऑर्डिनेंस के अनुसार एडमिशन के लिए स्टूडेंट्स को आवेदन फॉर्म के साथ अपने टॉपिक पर कम से कम 15 सौ शब्द अधिकतर तीन हजार अक्षरों में लिखने होंगे। इसके साथ ही अपने अनुभव और रिकॉर्ड के प्रूफभी फॉर्म के साथ जमा करने होंगे। नए ऑर्डिनेंस में यह भी कहा गया है कि अगर कोई अभ्यर्थी एक बार डी-लिट के एडमिशन की प्रक्रिया से रिजेक्ट हो जाता है, तो उसे कम से कम दो साल तक आवेदन करने से रोक दिया जाएगा। इसके अलावा जब अभ्यर्थी अपनी थीसिस पूरी कर जमा करने की तैयार कर रहे होंगे तो उन्हें पहले एक सेमिनार भी कराना होगा। इसी के बाद ही वे थीसिस जमा कर सकेंगे।

इस संबंध में लविवि के प्रवक्ता प्रोफेसर दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि डी-लिट के नए ऑर्डिनेंस को शासन से स्वीकृति मिल गई है। जल्द ही यूनिवर्सिटी की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया जाएगा। जिससे आने वाले दिनों में नए ऑर्डिनेंस के अनुसार एडमिशन हों सकें।

i-NEXT PAGE IV

लखनऊ यूनिवर्सिटी में स्टूडेंट्स को दिया जाएगा संतुलित जीवन जीने का संदेश

एलयू में लाइफस्टाइल का भी पाठ

लखनऊ यूनिवर्सिटी में साइकोलॉजी में पढ़ाया जाएगा जीवन को कैसे रखें संतुलित

2 फीसदी बीमारिया ही जेनेटिक या एक्सिडेंटल, बाकी बीमारियों का संबंध हमारे सोच से है

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (28 Sept): सिर्फ दो प्रतिशत बीमारियां ही जेनेटिक या एक्सीडेंटल होती हैं. बाकी 98 प्रतिशत बीमारियों का सीधा संबंध हमारी सोच से होता है. यदि हम अंतरमुखी हैं, यानि अपनी बात या समस्याएं दूसरों से शेयर नहीं करते हैं तो आने वाले दिनों में हम ब्लड प्रेशर, हार्ट अटैक, कैंसर जैसी बीमारियों का शिकार हो सकते हैं. स्वस्थ रहने के लिए व्यक्तित्व में संतुलन बेहद जरूरी है. जीवन को कैसे संतुलित रखा जाए, अब इसकी जानकारी नई शिक्षा नीति 2020 के तहत लखनऊ यूनिवर्सिटी के साइकोलॉजी डिपार्टमेंट की तरफ से तैयार किए गए नए कोर्स में स्टूडेंट्स को दी जाएगी.

कई टॉपिक जोड़े गए

डिपार्टमेंट की कोआर्डिनेटर डॉ. अर्चना शुक्ला ने बताया कि नए सिलेबस में ग्रेजुएशन लेवल पर तीन

अलग से पेपर एड किए गए हैं. इसमे स्कूल साइकोलॉजी से लेकर हेल्थ साइकोलॉजी, निगेटिविटी सहित कई अन्य टॉपिक एड किए गए हैं. वहीं लास्ट सेमेस्टर में स्टूडेंट्स की इंटर्नशिप को शामिल किया गया है. जिससे स्टूडेंट्स को किताबी ज्ञान से बाहर निकलकर प्रैक्टिकल नॉलेज दी जा सके.

व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण भूमिका

डॉ. शुक्ला ने बताया कि आत्मनियंत्रण व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है. इसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व की भी भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है. कोई भी बीमारी आने से पूर्व हमें संकेत देती है लेकिन व्यस्त जीवन में हम उनकी तब तक अनदेखी करते हैं, जब तक वह हमारे लिए गम्भीर न बन जाए. इसमें मानसिक स्वास्थ्य मुख्य होता है. इसलिए नए सलेबस में स्टूडेंट्स को इन्हीं सब चीजों की जानकारी दी जाएगी.

अलग से यह पेपर किए गए एड

स्कूल ऑफ साइकोलॉजी
इसमें गुरुकुल परिवेश से लेकर ब्रिटिश काल को आंशिक तौर पर लेते हुए आधुनिक शिक्षा का समावेश किया गया है. स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति और आवश्यकताएं, टीचर्स मेंटल हेल्थ, स्कूल की एक्टिविटी जैसे टॉपिक शामिल किए गए हैं.

इनवायरमेंटल साइंस
इनवायरमेंटल साइंस में पर्यावरण संरक्षण को आदतों में कैसे शामिल किया जाए, जिससे संवेदनशील बना जा सके की जानकारी दी जाएगी.

हेल्थ साइकोलॉजी
पढ़ाई के दौरान स्टूडेंट्स को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि उनकी हेल्थ, मेंटल व व्यक्तित्व सब आपसे में जुड़े है. यह जानकारी इसमें दी जाएगी.

तनाव का नकारात्मक प्रभाव
इसमें जानकारी दी जाएगी कि हेल्थ पर हर स्ट्रेस निगेटिव असर नही छोड़ता है, कई स्ट्रेस पॉजिटिव भी होते हैं. उदाहरण के तौर पर एग्जाम.

इंटर्नशिप
लास्ट सेमेस्टर में स्टूडेंट्स को प्रोजेक्ट वर्क दिए जाएंगे, जिन्हें उन्हें पूरा करना होगा.

नए सिलेबस में ग्रेजुएशन लेवल पर तीन अलग से पेपर एड किए गए हैं. लास्ट सेमेस्टर में इंटर्नशिप को शामिल किया गया है. जिससे स्टूडेंट्स को प्रैक्टिकल नॉलेज दी जा सके.
डॉ. अर्चना शुक्ला, कोआर्डिनेटर, साइकोलॉजी डिपार्टमेंट, लखनऊ यूनिवर्सिटी

12 साल बाद एलयू में फिर होंगे डी-लिट के एडमिशन

लखनऊ यूनिवर्सिटी की ओर से तैयार ऑर्डिनेंस को राजभवन से मिली मंजूरी

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (28 Sept): लखनऊ यूनिवर्सिटी में जल्द डी-लिट कोर्स शुरू होने जा रहा है. यूनिवर्सिटी की ओर से तैयार डी-लिट के नए ऑर्डिनेंस को राजभवन ने मंजूरी दे दी है. इसके साथ ही 12 साल बाद एलयू में दोबारा डी-लिट एडमिशन की प्रक्रिया शुरू होगी. ज्ञात हो कि 2008 में पूर्व वीसी प्रो. बरार ने डी-लिट के एडमिशन पर रोक लगा दी थी. गौरतलब है कि लखनऊ यूनिवर्सिटी ने कार्य परिषद से नए ऑर्डिनेंस को तैयार कर मंजूरी के लिए राजभवन भेजा था. उम्मीद है कि इस साल से लखनऊ यूनिवर्सिटी में डी-लिट का एडमिशन शुरू होंगे.

डी-लिट के नए ऑर्डिनेंस को शासन ने मंजूर कर लिया है. इसे जल्द ही यूनिवर्सिटी की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया जाएगा. आने वाले दिनों में नए ऑर्डिनेंस के अनुसार एडमिशन लिए जाएंगे.
डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव, प्रवक्ता, लखनऊ यूनिवर्सिटी

10 साल का अनुभव जरूरी

डी-लिट के लिए लखनऊ यूनिवर्सिटी में जो ऑर्डिनेंस तैयार किया जा रहा है, उसके अनुसार इस कोर्स में एडमिशन लेने के लिए कम से कम 10 साल का अनुभव होना जरूरी है. साथ ही कैंडीडेट के कम से कम 15 जर्नल टॉप पब्लिशर्स के यहां प्रकाशित होने चाहिए. नए ऑर्डिनेंस के अनुसार एडमिशन के लिए स्टूडेंट्स को आवेदन फॉर्म के साथ अपने टॉपिक पर कम से कम 15 सौ शब्द, अधिकतम तीन हजार अक्षरों में लिखने होंगे. उन्हें अपने अनुभव और रिकॉर्ड के प्रूफ भी फॉर्म के साथ जमा करने होंगे.

तो नहीं मिलेगा दो साल का मौका

नए ऑर्डिनेंस में यह कहा गया है कि अगर कोई कैंडीडेट एक बार डी-लिट के एडमिशन की प्रक्रिया से रिजेक्ट हो जाता है, तो उसे कम से कम दो साल तक आवेदन से रोक दिया जाएगा. वहीं जब कैंडीडेट अपनी थीसिस पूरी कर जमा करने की तैयार कर रहे होंगे तो उन्हें पहले एक सेमिनार भी कराना होगा. इसके बाद ही स्टूडेंट्स अपनी थीसिस लखनऊ यूनिवर्सिटी में जमा कर सकेंगे.

नई शिक्षा नीति बताएगी जीवन में संतुलन स्थापित करने के तरीके

लविवि के मनोविज्ञान विभाग की पहल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सौ में दो फीसद बीमारियां ही जेनेटिक अथवा एक्सिडेंटल होती है, बाकी 98 फीसद बीमारियों का सम्बन्ध हमारे सोच से है। यदि हम अपना गुस्सा पी जाते हैं या अंतर्मुखी हैं या अपनी बात किसी से शेयर नही करते है तो जाहिर है भविष्य में टाइप सी में शामिल रक्तचाप, हार्ट अटैक अथवा कैंसर जैसी बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है। यदि हमें स्वस्थ रहना है तो फिर व्यक्तित्व में संतुलन जरूरी है। जीवन में सन्तुलन कैसे रखा जाय, इसकी जानकारी नई शिक्षा नीति 2020 के तहत लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग की तरफ से तैयार नए पाठ्यक्रम में छात्रों को यह जानकारी दी जाएगी।

विभाग की कोआर्डिनेटर डॉ अर्चना शुक्ला के मुताबिक नए सलेबस में स्नातक स्तर पर तीन पेपर अलग से एड किये गए हैं। जिससे बच्चे किताबी ज्ञान से बाहर निकलकर प्रेक्टिकल से दो-चार हो सकें। डॉ शुक्ला के मुताबिक आत्मनियंत्रण व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। इसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व की भी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। कोई भी बीमारी आने से पूर्व संकेत देती है।

यह पेपर जोड़े गए

स्कूल मनोविज्ञानः इसमें गुरुकुल परिवेश से लेकर ब्रिटिश काल को आंशिक तौर पर लेते हुए आधुनिक शिक्षा का समावेश किया गया है। विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति और आवश्यकता, टीचर्स मेंटल हेल्थ, स्कूल की एक्टिविटी जैसे टॉपिक शामिल हैं।
पर्यावरण विज्ञानः इसमें पर्यावरण संरक्षण को आदतों में कैसे शामिल किया जाय, जिससे संवेदनशील बना जा सकेए जानकारी दी जाएगी।
स्वास्थ्य मनोविज्ञानः पठन-पाठन के दौरान स्टूडेंट्स को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि आपका स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य व व्यक्तित्व सब आपसे में जुड़े हैं, की जानकारी दी जाएगी।
तनाव का नकारात्मक प्रभावः स्वास्थ्य पर हर स्ट्रेस निगेटिव असर नही छोड़ता है। इनमे कई स्ट्रेस पॉजिटिव भी होते हैं। उदाहरण के तौर पर परीक्षा।
इंटर्नशिपः अंतिम यानी आठवें सेमेस्टर में स्टूडेंट्स को प्रोजेक्ट वर्क दिए जाएंगे।

HINDUSTAN PAGE 6

एलयू में बी फार्मा और डी फार्मा कोर्स को मंजूरी

लखनऊ। फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया ने एलयू में सत्र 2021-22 की फार्मा और डी फार्मा पाठ्यक्रम संचालित करने की आधिकारिक मंजूरी दे दी है। अभी तक काउंसिल की ओर से वैकल्पिक मंजूरी दी गयी थी। काउंसिल ने बी फार्मा में 100 सीट और डी फार्मा में 60 सीटों पर प्रवेश लेने की अनुमति दी है। साथ ही काउंसिल ने बी फार्मा और डी फार्मा रेगुलेशन एक्ट के तहत प्राधानाचार्य एवं शिक्षक की भर्ती करने की भी स्वीकृति प्रदान की।

पीसीआई से मिली बीफार्मा व डीफार्मा कोर्स चलाने की मंजूरी

लखनऊ। फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया ने लखनऊ विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट आफ फार्मक्यूटिकल साइंस को बीफार्मा व डीफार्मा कोर्स चलाने की मंजूरी दे दी है। अभी तक काउंसिल की ओर से वैकल्पिक मंजूरी दी गयी थी। काउंसिल ने बी फार्मा में 100 सीट और डी फार्मा में 60 सीटों पर प्रवेश लेने की अनुमति दी है। इसके साथ ही काउंसिल ने बी फार्मा और डी फार्मा रेगुलेशन एक्ट के तहत प्राधानाचार्य एवं शिक्षक की भर्ती करने की भी स्वीकृति प्रदान कर दी है।